शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.III, pp (927-930) July - Sep. 2019

जनसंचार माध्यम और हिन्दी भाषा

डॉ० मिन्तु
असि० प्रोफे०, हिन्दी विभाग
कु०मा०रा० महिला स्ना० महा०
बादलपुर गौ०बु० नगर
Email :drmintiverma83@gmail.com

सारांश

हिन्दी हमारी संस्कृति की पोषक और रक्षक है । वैश्वीकरण, सूचना विस्फोट एवं संचार क्रान्ति से उत्पन्न हुए परिदृष्य ने हिन्दी का नया रूप गढ़ा है । जनसंचार माध्यमों की इसमें विशिष्ट भूमिका रही है । जनसंचार माध्यमों ने हिन्दी के जिस सर्वसमर्थ नए रूप का विकास किया हैं उसने भाषा समृद्ध समाज के साथ–साथ भाषा वंचित समाज को भी विशिष्ट वैश्विक संदर्भों से जोड़ा है । आज हिन्दी सहज रूप से ज्ञान–विज्ञान व आधुनिक विषयों से जुड़कर जनसंचार माध्यमों के द्वारा विश्व जनमत का निर्माण कर रही है । समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, टी०वी चैनल, वेबसाइट व साइबर जगत पत्रिकाएँ वैश्विक मानव की छवि गढ़ते हैं तो भाशा ही उनका माध्यम है । जनसंचार माध्यमों की बढ़ती लोकप्रियता व बदलते स्वरुप ने परोक्ष रूप से हिन्दी को जीवीकोपार्जन की भाषा बना दिया है । आज हिन्दी न केवल हमारी अस्मिता की आवाज है अपितु रोजगार का सशक्त औजार भी है।

प्रस्तावना

आधुनिक युग सूचना और संचार का युग है । सूचनाओं का महत्व तो प्राचीन काल से चला आ रहा है लेकिन आधुनिक युग में विश्व की बदलती हुई तस्वीर और वैश्वीकरण की आँधी ने विश्व के सभी देशों को एक–दूसरे के निकट ला दिया है । नए जनसंचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है । हर प्रक्रिया में माध्यम बदल रहे हैं, हिन्दी भी बदल रही है । नए रूप बन रहे हैं बदलती भाषा संचार की अनन्त अन्तर्क्रियाओं को जन्म दे रही हैं । कंप्यूटर, इंटरनेट, केबल, मल्टीमीडिया, क्षेत्रीय चैनल ब्लॉग, ईमेल, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, फेसबुक, ऑरकुट , गूगल, आदि नए जनसंचार माध्यमों ने सामाजिक एवं संस्कृतिक संक्रमण को बढ़ाने के साथ – साथ हिन्दी भाषा विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है । हिन्दी वेब पत्रकारिता नए जनसंचार माध्यमों में अपना अलग स्थान बना चुकी है । आज विश्व मीडिया की नजर हिन्दी वेब पत्रकारिता पर है "वेब पत्रकारिता को हम इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता आदि नाम से जानते हैं । जैसा कि वेब पत्रकारिता नाम से स्पष्ट है यह

कंप्यूटर और इंटरनेट के सहारे संचालित ऐसी पत्रकारिता है जिसकी पहुँच किसी एक पाठक, एक गॉव, एक प्रखंड, एक प्रदेश, एक देश तक नहीं बल्कि समूचे विश्व तक है जो डिजिटल तरंगों के माध्यम से प्रदर्शित है । वेब मीडिया सर्वव्यापकता को भी चरितार्थ करती है जिसमें खबरें दिन के चौबीस घंटे और हफ्ते के सातों दिन उपलब्ध रहती हैं"।[1] हिन्दी भाषा विकास में जनसंचार माध्यमों में वेब मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी भाषा शिक्षण का प्रचार–प्रसार वर्तमान काल में नए जनसंचार माध्यमों के कारण गतिमान बन रहा है । चिट्ठा जगत हिन्दी को लेकर अब अपनी विशालता की और बढ़ रहा है यह बात सराहनीय है । राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, व्यक्तिगत, वाणिज्य, अनुसंधान और शिक्षा आदि क्षेत्रों की जानकारी ब्लॉग पर हिन्दी भाषा में उपलब्ध हो रही हैं । 1997 सें वर्श 2010 तक के ब्लॉगिंग इतिहास का अध्ययन करने पर पता चलता है कि दुनियाभर के अनेक साहित्यकार अब हिन्दी भाषा में ब्लॉग लिख रहे हैं । अपनी बात को इस नए जनसंचार माध्यम के जरिये लोगों तक पहुँचा रहे हैं । "हमारा अपना भारतीय प्रौद्योगिकी विकास आज अपने शीर्ष पर है । हमारी जनसंचार प्रणाली पहले से बेहतर और लगातार बेहतर होती जा रही है । इस विकास की कड़ी को जुड़ने में एक लम्बा वक़्त लगा है । सरकारें आती और जाती रहीं लेकिन भारतीय जनसंचार और प्रौद्योगिकी अपने विकास के पहिये को घुमाती रही "।[2]

हिन्दी भाषा के विकास में नए जनसंचार माध्यमों की उपादेयता पर विचार किया जाये तो केबल, मल्टीमीडिया, इंटरनेट आदि अंतरिक्ष नए जनसंचार माध्यम समकालीन समाज में हिन्दी भाषा के साथ–साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को बढ़ावा देने में सफल हुए दृष्टिगोचर होते हैं ।

हिन्दी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में बखूबी देखा जा सकता है। संचार माध्यमों ने हिन्दी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है । भाषाएं संस्कृति की वाहक होती हैं । डिजिटल दुनिया में हिन्दी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना तेजी से बढ़ रही है । भारत में हर पांचवा इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिन्दी का उपयोग करता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक हिन्दी दुनिया में तीसरी सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा थी परन्तु आज वह विश्व की सर्वाधिक बोले जाने वाली दूसरी भाषा बन चुकी है । हिन्दी के इस रूप विस्तार के मूल में यह तथ्य निहित है कि गतिशीलता हिन्दी का बुनियादी चरित्र है। इन्टरनेट एक ऐसा माध्यम है जिसने दुनिया को सचमुच मनुष्य की मुट्ठी में कर दिया है । सूचना समाचार और संवाद प्रेषण के लिए इन्होने हिन्दी को विकल्प के रूप में विकसित करके संचार तकनीक को समृद्ध किया ही है, हिन्दी को भी समृद्धतर बनाया है । इसी प्रकार इन्टरनेट और वेबसाइट की सुविधा ने पत्र– पत्रिकाओं के ई–संस्करण तथा पूर्णतः ऑनलाइन पत्र–पत्रिकाऍं उपलब्ध कराकर सर्वथा नयी दुनिया के दरवाजे खोल दिए हैं । आज हिन्दी की अनेक पत्रिकायें विश्व भर में सभी जगह सुलभ है। हर प्रकार की जानकारी इन्टरनेट पर हिन्दी में प्राप्त होने

लगी है । इस तरह हिन्दी भाषा ने बाज़ार और कंप्यूटर दोनों की भाषा के रूप में अपना सामर्थ्य सिद्ध कर दिया है ।

इंटरनेट द्वारा वर्ल्ड वाइड वेब के आधार से घर बैठे शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य एवं सौंदर्य से लेकर वाणिज्य की भाशा भी सहजता से उपलब्ध हो रही है । आज समाचार चैनलों पर दिखाई जाने वाली खबरों और कार्यक्रमों का इन्टरनेट वर्जन उपलब्ध है । इसी तरह सभी समाचार पत्र–पत्रिकाएं भी वेब पत्रकारिता की दुनिया में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं ।

इंटरनेट उपभोक्ताओं की तेजी से बढ़ रही संख्या इसी और इशारा करती है कि अगले कुछ वर्षों में वेब पत्रकारिता कहीं अधिक प्रभावशाली मंच बनाने की ओर उन्मुख है हालॉकि पश्चिमी देशों में यह पहले ही हो चुका है। "नयी प्रौद्योगिकी से समाचार मीडिया में आमूल चूल परिवर्तन हुए हैं साथ ही इसके विस्तार की गहराई और व्यापकता भी बेमिसाल है"।[3]

अतः नए जनसंचार माध्यम भले ही व्यवसायवृत्ति के अनुरूप विकास की ओर चल रहे हैं उनका उद्देश्य जनहित ही है, यह भी मानना होगा। अनेक चुनौतियों का सामना जनसंचार के माध्यमों को करना पड़ रहा है। उनमे प्रमुख है भाषाई चुनौती। भाषाई चुनौती का सामना करने के लिए नए जनसंचार माध्यम अब विभिन्न सॉफ्टवेयर टूल्स का निर्माण कर हिन्दी भाषा की ओर ध्यान दे रहे हैं । केवल देवनागिरी लिपि का कंप्यूटरी विकास ही हिन्दी का विकास नहीं है अपितु हिन्दी का सम्पूर्ण कंप्यूटरी विकास होना जरुरी बन गया है। "हिन्दी कम्प्यूटरी का विकास हिन्दी के विकास की गति और दिशा निश्चित करेगा । इस समय हिन्दी के सम्मुख वैसा ही अवसर उपस्थित है जैसा बीसवीं शती के आरम्भ में था । यदि हम सब हिन्दी कम्प्यूटरी का समुचित प्रबंध कर सकें तो यह हिन्दी की तीव्रतम विकास का एक नया काल सिद्ध हो सकता है"।[4] कहना उचित होगा की नए जनसंचार माध्यमों के कारण हिन्दी का कम्प्यूटरी विकास अब तेजी से हो रहा है। नए जनसंचार माध्यमों की इस भूमिका का हमें स्वागत करना होगा। अनेक चुनौतियों के कारण भले ही हिन्दी कम्प्यूटरी का विकास नहीं हुआ है परन्तु इन्टरनेट पर अब दिन प्रतिदिन हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है इस बात को हम नकार नहीं सकते । "सूचना प्रौद्योगिकी ने आधुनिक जनसंचार माध्यमों को नया विस्तार प्रदान किया है । इससे न केवल जनसंचार माध्यम का आयाम विस्तृत हुआ है अपितु भाषा प्रयोग में भी विविधता के दर्शन हो रहे हैं । भाषा का ज्ञान संदेश की सरलता को सम्प्रेषित करता है । भाषा के सहज गुण धर्म को भाषा की प्रकृति माना जाता है"।[5]

इस प्रकार कहा जाता हैं कि 21वीं शाताब्दी में मुद्रित और इलैक्ट्रानिक दोनों ही प्रकार के जनसंचार माध्यम नए विकास के आयामों को छू रहे हैं जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दी भाशा भी नई–नई चुनौतियों का सामना करने के लिए नई षक्ति का अर्जन कर रही है । हिन्दी भाशा विकास में नए जनसंचार माध्यमों की भूमिका के संदर्भ में अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अपने उदभवकाल से ही जनसंचार माध्यमों ने लोकशिक्षक की भूमिका में ही अपना कार्य जारी

रखा है । सामान्यजनों का रुझान हिन्दी भाषा के प्रयोग के प्रति बढ रहा है । कुछ भी हो यह निश्चित है कि इंटरनेट के माध्यम से जो हिन्दी का विकास हो रहा है वह सराहनीय है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 हंसराज सुमन, एस० विक्रमः वेब पत्रकारिता पृ० **15**

2 इरशाद अलीः कंप्यूटर मंत्रा (मासिक) जनवरी 2013 पृ० **44**

3 शालिनी जोशीः वेब पत्रकारिता नया मीडिया नए रुझान : पृ० **8**

4 आर० अनुराधाः न्यू मीडिया इंटरनेट की भाषायी चुनौतियॉ और संभावनाऍ पृ०**70**

5 www.news24*7. in@ moreabhivyakti -asp-